४. वादन

४.१ ध्वनियों की पहचान

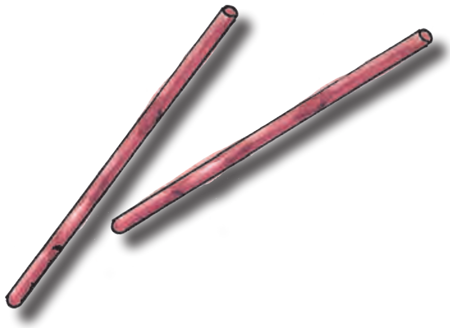

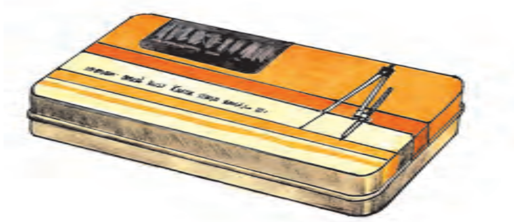

वादन के लिए वाद्‌य ही होना चाहिए अथवा उसे बजाने के लिए शास्त्रीय ज्ञान ही होना चाहिए; यह आवश्यक नहीं है । उपलब्ध किसी भी वस्तु पर जब आघात किया जाता है, तब सहजता से ध्वनि की निर्मिति होती है। इसी प्रकार का वादन भी गायन के लिए संगति कर सकता है। ऐसी ध्वनियाँ विद्‌यार्थियों को सुनवाएँ और उनसे विभिन्न पक्षियों, प्राणियों की ध्वनियाँ निकलवाएँ।

४.२ वाद्यों की पहचान

घंटा

ढोलक

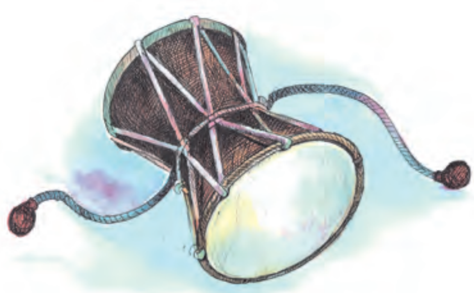

डमरू

मंजिरा/करताल

बाँसुरी

लेजिम

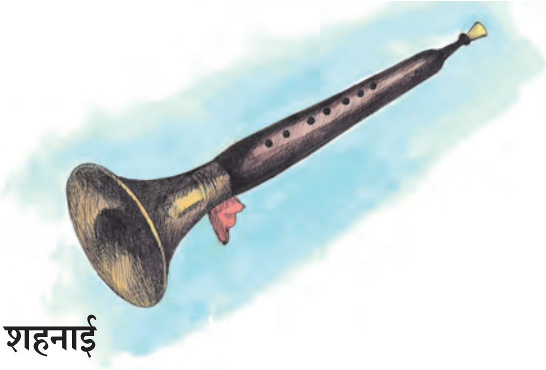

शहनाई

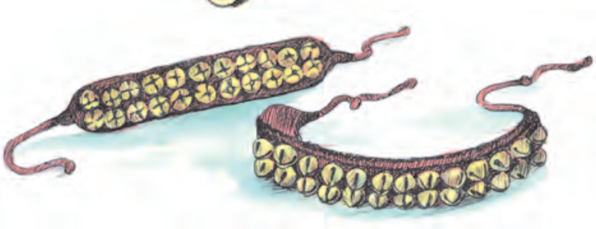

घुँघरू

हारमोनियम

विद्यार्थियों से चित्र में दर्शाए गए वाद्य पहचानने के लिए कहें। वाद्यों की उपलब्धता के अनुसार उन्हें वाद्यों की ध्वनियाँ सुनवाएँ।

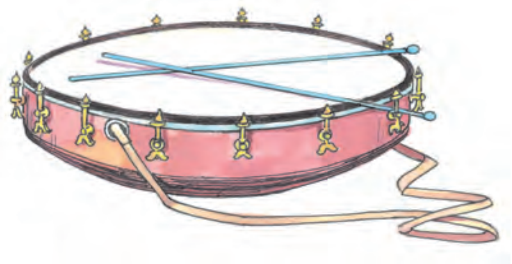

ताशा

तबला

खँजड़ी/खँजिरी

पखावज/मृदंग

४.३ अन्य ध्वनियाँ

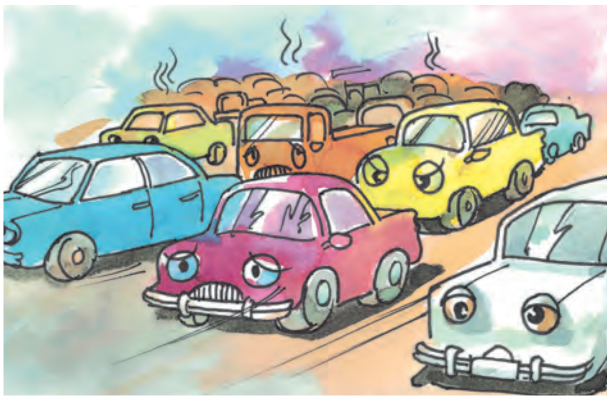

RLUN5N

अपने परिसर में सहजता से उपलब्ध होनेवाले वाद्यों का संक्षेप में परिचय करवाएँ तथा अपने आस-पास घटित होनेवाली विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं अथवा प्रसंगों में उत्पन्न होनेवाली ध्वनियों का परिचय करवाएँ।

४.३ वाद्यों के चित्र

सहजता से उपलब्ध होनेवाले वाद्यों के चित्र इकट्ठे कर उन्हें चिपकाओ और उनके नाम बताओ।